सितार वादन परंपरा में मैहर घराने का योगदान

Dr. LAYEKA BHATIA
Assistant Professor, Department of Music, MCM DAV College for Women, Sector 36-A, Chandigarh.

सार सक्षेप

सितार भारत के सबसे लोकप्रिय वाद्ययंत्रों में से एक है, जिसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत से लेकर हर तरह के संगीत में किया जाता है। यह एक ऐसा वाद्य है जिसने अपनी मधुरता एवं विकसित वादन शैली के कारण पूरे विश्व में अपना स्थान बना लिया है। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए यह प्रश्न स्वतः ही उठता है कि इस वाद्य को किस प्रकार आगे विकसित किया गया। शास्त्रीय संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाने में घरानों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक घराने में ऐसे संगीतज्ञ हुए हैं जिन्होंने अपनी कला साधना से संगीत की उपासना की तथा अपनी गायन तथा वादन शैली को निखारा। ऐसी ही एक परंपरा को मैहर घरानें से संबंधित प्रत्येक कलाकार ने सितार वादन तकनीक में अपना बहुमूल्य योगदान देकर आगे बढ़ाया। जिसका पूर्ण विवरण शोधपत्र में दिया गया है। इस शोधपत्र को लिखने का उद्देश्य मैहर घराने के उद्भव एवं विकास परंपरा के विषय में जानना है। किस प्रकार इसका उदभव हुआ तथा किन–किन प्रसिद्ध कलाकारों ने इसे आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दिया इसे दर्शाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सम्पूर्ण रूप प्रदान करने के लिए ऐतिहासिक शोध प्रविधि को प्रयोग करते हुए माध्यामिक स्रोतों द्वारा विभिन्न पुस्तकों तथा इंटरनेट द्वारा भी जानकारी एकत्रित की गई है। शोधपत्र से सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि मैहर घराना जिसे 'अलाउद्दीन खाँ' का घराना भी कहते हैं सितार वादन परंपरा की तकनीक को विकसित किया सितार को केवल एकल ही नहीं अपितु तथा वाद्यवृंद में भी उसका भलीभांति प्रचार एवं प्रसार किया।

मुख्य शब्द – सितार, मैहर घराना, अलाउद्दीन खाँ

घराना

घराना जिसे हम एक कुटुम्ब, परिवार या कुल के नाम से पुकारते हैं, वह मानव समाज का एकांश ही हो सकता है या एक छोटा बड़ा समुदाय ही हो सकता है। घरानों के माध्यम से संगीतज्ञों के एक विशेष वर्ग का सामुदायिक रूप से विकास होता है। यह विकास उनकी कला के प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित होता है। घरानों को एक जातीय समुह भी मान सकते हैं। संगीत जगत के प्रत्येक घराने की अपनी–अपनी विशेषताएँ होती हैं। स्वर लगाने के तरीके और राग विस्तार के ढंग में वह अपनी परम्परा अर्थात् पूर्वजों द्वारा स्थापित गायन–वादन नृत्य शैली का अनुयायी होता है। उसी शैली में वह कुशलता और प्रवीणता प्राप्त करते हुए पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करता है, इसी प्रकार धीरे–धीरे घराने का निर्माण होता है।[1]

घराना या सम्प्रदाय गुरू तथा शिष्य के संयोग से बनता है। यह गुरू शिष्य परम्परा, शास्त्र तथा कला दोनों के लिए आवश्यक मानी गई है। शास्त्र अथवा कला के सूक्ष्म अंगों का ग्रहण तब तक संभव नहीं जब तक योग्य आचार्य से शिक्षा न ली जाए। विद्या वही सकल होती है जो सही रूप से सीखी जाती है। विद्या या कला की सफलता में जितना योगदान योग्य शिष्य का है, उतना ही योग्य आचार्य का भी। घरानेदार संगीत ही भारत का परम्परागत संगीत है।[2]

किसी भी घराने के एक या दो गायक या वादक उस घराने की संगीत शैली का निर्माण करते हैं, फिर उसे अपने अभ्यास से खूब निखारते हैं और उसमें एक विशेषता को जन्म देते हैं। अपनी इसी शैली के वह संरक्षक और मार्गदर्शक बन जाते हैं। वह अपनी शैली का क्रियात्मक रूप से प्रचार भी करते हैं। किसी भी घराने का भविष्य शिक्षा ग्रहण करने वाले उन शिष्यों पर अवलम्बित रहता है जो उसे जीवित रखकर उसके कर्णधार बनते हैं। प्रत्येक घराने की वादन शैली, मींड लगाना, गमक का उपयोग, तानों की बनावट और उसकी लयकारी, गत की बन्दिश, आलापचारी आदि अलग ढंग की होती है।[3]

आज गायन एवं वादन के अनेक घराने हैं, परन्तु सितार में घरानों की संख्या सीमित हैं। आज का सितार वादक उन सब शैलियों का गुण अपने वादन में भरने का प्रयास करता है, जिससे श्रोता आनन्दित हों। इस दृष्टि से घराने या शैलियों की परम्परा टूटती सी जा रही है। सितार की वादन शैली मुख्य रूप से दो ही हैं –मसीतख़ानी तथा रज़ाखानी। इन दोनों शैलियों को आज के सभी सितारवादक बजाते हैं।

अनेक सितार वादकों के पूर्वज या तो गायक थे या फिर वीणा वादक थे। उनमें से कुछ सारंगी, रबाब या सरोद वादक भी थे।[4] प्रत्येक कलाकार किसी न किसी घराने से जुड़ा है और वह अपने घराने के अलावा अपनी सृजनात्मक शक्ति और श्रम द्वारा कुछ नया आयाम अपने वादन में ला देता है, लेकिन फिर भी उसे सीखने के लिए किसी अच्छे उस्ताद और घराने का सहारा लेना ही पड़ता है। सितार वादन की परंपरा में सितार को विकसित एवं उसका प्रचार प्रसार करने में मैहर घराने ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

मैहर घराना

सितार वादन का मैहर घराना भारत में सितार का महत्त्वपूर्ण घराना है। इस घराने की नींव उस्ताद अलाउद्दीन खाँ (1862 20 वीं शताब्दी) ने रखी, जो कि मैहर रियासत के रहने वाले थे। इसी कारण इस घराने का नाम भी मैहर घराना पडा। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के पिता साधु खाँ भी संगीत प्रेमी थे। प्रसिद्ध रबाब वादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ को बचपन से ही घर में सांगीतिक माहौल मिला। 8 वर्ष की अल्प आयु में ही इन्हें स्वर तथा ताल का अच्छा ज्ञान था। 15 वर्ष की उम्र तक इन्होंने अनेक वाद्य बजाने में कुशलता हासिल कर ली। एक दिन उन्होंने रामपुर के सरोद वादक उस्ताद अहमद अली खाँ का सरोद वादन सुना और उस पर आसक्त हो गये। तत्पश्चात उन्होंने उस्ताद अहमद अली खाँ से सरोद की शिक्षा ली। बाद में उत्तर प्रदेश की रियासत में आ गये।[5] रामपुर उन दिनों संगीत का एक प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ के नवाब संगीत के मर्मज्ञ तथा अनन्य प्रेमी थे उनके दरबार में उस्ताद वज़ीर खाँ नामक संगीतज्ञ थे। बड़ी कठिनाई से नवाब साहब की सिफारिश से अलाउद्दीन खाँ को उस्ताद का शिष्यत्व प्राप्त हुआ। कई वर्षों की सेवा के पश्चात् उस्ताद वज़ीर खा ने अलाउद्दीन खाँ को संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की एवं शिक्षा पूर्ण होने पर इन्हें उस्ताद से अपनी कला के प्रदर्शन की आज्ञा भी मिल गई। तत्पश्चात् यह कुछ समय कलकत्ता में रहे, फिर स्थाई रूप से मैहर में आकर बस गये। मैहर रियासत के राजा ब्रजनाथ इनके शिष्य रहे। इन्होंने यहा ''मैहर बैण्ड'' की स्थापना की। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने ध्रुपद अंग पर आधारित अपनी स्वंय की शैली विकसित की, जिसमें झाला समेत आलाप के विभिन्न चरणों का विस्तृत निष्पादन हुआ।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने राग के पश्चात् धुन की भी शुरूआत की, जो सम्पूर्ण राग के निष्पादन के पश्चात् प्रस्तुत किया जाता था। इस शैली को उनके शिष्यों ने और भी विकसित किया। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने 'सा' से प्रारम्भ होने वाली द्रुत गतों की एक विशिष्ट संरचना की। अपने वादन में विभिन्न तालों का प्रयोग करने का श्रेय इस घराने के संगीतज्ञों को ही जाता है। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ द्वारा विकसित वादन परम्परा को उनके शिष्यों ने आगे बढाया उनके शिष्यों की एक लम्बी सूची है जो इस बात को स्पष्ट करती है कि उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने मुक्त ह्रदय से संगीत की शिक्षा दी। आपने कई प्रतिष्ठित कलाकार तैयार किए आपकी शिष्य परम्परा में अली अकबर खाँ, पुत्री अन्नपूर्णा देवी, दामाद रविशंकर, तिमिर वरन, पन्नालाल घोष, वीरेन्द्र किशोर राय चौधरी, श्रीशरण रानी, ज्योतिन भट्टाचार्य, प. निखिल बनर्जी, पं. इन्द्रनील भट्टाचार्य, आशीष खाँ आदि प्रमुख हैं–

मैहर घराने की शिष्य परम्परा में एक खास बात यह दिखाई देती है कि इनकी वादन शैली ध्रुपद तथा बीन के मिश्रण तथा वीणा की मन्द्र एवं अनुमन्द्र आलापचारी से परिपूर्ण है। इस घराने के सितार वादन में सरोद अंग स्पष्ट रूप से झलकता है एवं कण, खटका, मुर्की, ज़मज़मा व बीन अंग के गम्भीर वादन से ये शैली ओत–प्रोत है।[6]

मैहर घराने की वंशावली

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ [7]

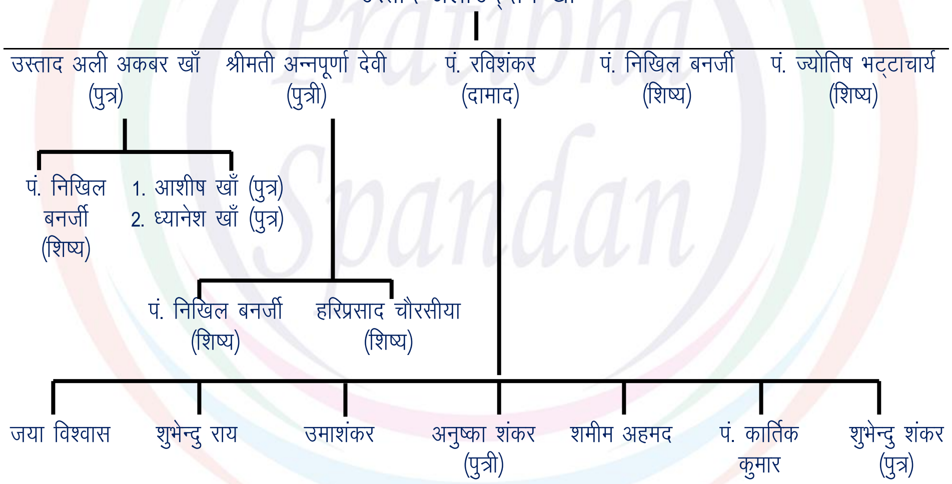

मैहर घराना वास्तव में सितार का न होकर सरोद का घराना है। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने अपने श्रम से गायन तथा अनेक वाद्य सिखे और सरोद तथा सितार को अपनी प्रमुख वाद्य बना लिया। मैहर घराने के वंशजों में सर्वप्रथम अली अकबर खाँ (14 अप्रैल 1922) साहब का नाम आता है।[8] उसी घराने के कलाकार पं0 रविशंकर ने भी अपनी प्रतिभा से सितार को निखारा पं0 रविशंकर ने सितार में परम्परागत चली आ रही सितार शैली में विशेष निखार पैदा किया। इनके वादन में बीन अंग व गायकी अंग का समन्वय कृंतन, खटका, ज़मज़मा तथा लयकारी इत्यादि का सितार में स्पष्ट प्रयोग हुआ है।

पं0 रविशंकर ने कर्नाटक और उत्तर भारतीय संगीत के नैकट्य के लिए दक्षिणी भारतीय 'हसंध्वनि' व चारूकेशी इत्यादि रागों को उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित किया व इनके मिश्रण से अनेक नए रागों की रचना भी की। मोहनकौंस, तिलक श्याम, रसिया इनके स्वनिर्मित रागों के अतिरिक्त गंगेश्वरी,

रंगेश्वरी, परमेश्वरी और कामेश्वरी चार नव रागों की रचना सन् 1968 में की।[9] उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, पं. रविशंकर तथा उस्ताद अली अकबर द्वारा विभिन्न बंदिशों पर गत वादन किया गया है। जिनका विवरण निम्नलिखित है–

राग गौड़मल्हार की बन्दिश–

बरखा रितु आई
पवन बहे सनन ननन नननन, नननना,
नननन संनाई

इस बन्दिश के आधार पर स्वर्गीय बाबा अलाउद्दीन खाँ साहब गत बजाते थे।

राग गौड़–मल्हार (द्रुतगत) तीन ताल

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
							स्थाई	ग	मग	रे	स	नि़	सस	ग	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	–	–	–	गम	पग	मम	रेस								
दा	ऽ	ऽ	ऽ	दिर	दिर	दिर	दिर								
								ग	मम	रेरे	रेरे	प	–	ग	म
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	ऽ	दा	रा
प	गग	म	प	ग	मम	रे	स								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ग	मम	रे	प	म	पप	ध	सं
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
धनि	संरें	संनि	धप	ानि	धप	गम	रेस								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								
							अतंरा	म	मम	मम	मम	प	प	मप	धनि
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर
सं	–	सं	सं	नि	रेंरें	सं	–								
दा	–	दा	रा	दा	दिर	दा	ऽ								
								ध	निनि	प	म	ग–	मरे	–रे	प
								दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दा
ग	मम	रे	स	ध़	नि़नि़	प़	स								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ग	मम	रे	स	म	–	प	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
मप	धनि	सं	सं	–	नि	रेंरें	सं								
दिर	दिर	दा	रा	ऽ	दा	दिर	दा								
								ध	निनि	ध	प	म	गग	रे	ग
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
मप	धनि	संरें	संनि	ानि	धप	गम	रेस								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								

कुंवर श्याम की प्रसिद्ध ठुमरी 'बाट चलत मोरी चुनरी रंग डोरी' की स्वर रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के बोलों का प्रयोग करके पं. रविशंकर तथा उस्ताद अलीअकबर खाँ द्वारा इस पर गत वादन किया गया है।[10]

उदाहरणार्थ :– राग–भैरवी

(द्रुतगत) तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
प	–	प	ध	म	पप	ग	म	प	निनि	ध	प	ध	पप	ग	म
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	प	म	–	ग	रेरे	रे	रे	ग	मम	रे	रे	स	स	स	स
दा	रा	दा	ऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
नि	स	ग	म	प	पप	ग	म	ध	नि	संसं	संसं	रें	निनि	संसं	संसं
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर
सं	गंगं	रें	गं	सं	गंगं	रें	सं	निनि	धध	निनि	धध	प	पप	प	सं
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	सं	–	सं	ध	निनि	ध	नि	–	नि	प	ध	प	ग	–	म
दा	दा	ऽ	रा	दा	दिर	दा	दा	ऽ	रा	दा	रा	दा	दा	ऽ	रा

प्रसिद्ध सितार वादक अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ भी सितार वादन में अद्वितीय स्थान रखते हैं। सितार में कण, स्वरों का लगाव और सितार की तैयारी उनकी योग्यता का उदाहरण प्रस्तुत करती है। आपने एक नए बाज को भी प्रस्तुत किया है जिसे ज़ाफरखानी बाज कहते हैं। इन्होंने वादन में वीणा की अनुवृति के रूप में बाएं हाथ की उंगलियों का कठिन प्रयोग करके सितार वादन को सजाया। तिहाई के तीनों टुकड़ों को विभिन्न स्वरों पर भिन्न–भिन्न लयकारी में बजाना इनकी विशेषता रही। ऐसा प्रतीत होता है कि इस घराने में सभी शैलियों के गुणों का अनुकरण हुआ। इस घराने ने सितार की उसकी चर्मोत्कृष्ट स्थिति पर पहुँचाया तथा इसकी तकनीक को भी विकसित किया। सितार वादन परंपरा में मैहर घराने का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 चौबे सुशील कुमार, संगीत के घरानों की चर्चा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लख़नऊ, द्वितीय सं 1984 पृ. 14

2 बैंकट, बाबू भाई 'संगीत में घराना' संगीत कला विहार, जुन 1957, पृ. 250

3 कपूर तृप्त, उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, हरमन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 42

4 भटनागर रजनी, 'सितार वादन की शैलियाँ 'कनिष्क पब्लिशर्स, अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली 2006, पृ0 88

5 मानकर वीणा, संगीतसार, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली पृ. 96

6 भटनागर रजनी, 'सितार वादन की शैलियाँ' कनिष्क पब्लिशर्स, अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली 2006, पृ0 88

7 जैन प्रभा, 'भारतीय संगीत के उन्नायक, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, पृ. 7

8 जैन प्रभा, भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, पृ. 56

9 'संगीत' मासिक पत्रिका, अक्टुबर 1986, पृ. 38

10 मिश्रा अरुण, भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002, पृ. 233

11 www.itshindi.com/alauddin-khan.html

12 www.newslaundry.com/2018/09/06/alauddin-khan-maihar-gharana-pt-ravi-shankar-indian-classical-music